

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

आज हम मन से संबंधित कुछ ऐसे विषय को छूने जा रहे हैं जिसे मनोविज्ञान में डर या भय के साथ जोड़ा जाता है। अक्सर देखा गया है कि मनुष्य का सम्पूर्ण व्यक्तित्व इन्हीं डरों के इर्द गिर्द घूमता रहता है। मनुष्य का शरीर दो भागों में विभाजित है, स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर। स्थूल शरीर के भाग को तो आप जानते ही हैं, वैसे ही सूक्ष्म शरीर हमारी आत्मा के साथ जुड़ा होता है। उसी के अंदर भय दुःख चिंता आदि रहते हैं। इन सभी का एक साथ समन्वय होना ही हमारे व्यक्तित्व को बदल देता है। इसलिए हम इसको एक श्रृंखला में करेंगे...

आत्मा को यदि मनोजैविक (साइको बायोलॉजी) रूप से देखा जाए तो हमारा जो मन है वो चार परतों से घिरा हुआ है। जिसमें पहला प्रकाशमय देह, दूसरा भावनात्मक देह, तीसरा बौद्धिक देह और चौथा भौतिक देह। इन चारों देह की दीवारों के मध्य मन अटका रहता है। इसमें सर्वप्रथम प्रकाशमय देह हमारी आभा का वो अंग है, जो भौतिक शरीर से चारो तरफ चिपका हुआ होता है

यह अठारह इंच शरीर के चारो तरफ फैलता है। भौतिक शरीर की ऊपरी परत भी हम इसे कह सकते हैं, जो कि भौतिक शरीर की फ्रिक्वेंसी से अलग होता है। माँ के गर्भ में बच्चा प्रकाशमय देह के आधार से ही प्रवेश करता है, अर्थात् प्रकाशमय



शरीर के ढाँचे के आधार से भौतिक शरीर लेता है। अर्थात् कोई व्यक्ति यदि बुद्धि से कमजोर है, कोई विकलांग है, तो उसकी विकलांगता प्रकाशमय शरीर में छुपी हुई होती है। अर्थात् जब गर्भ में आत्मा इस शरीर द्वारा प्रवेश करेगी तो वहाँ उस अंग में आभा या प्रकाश नहीं फैलेगा, जहाँ उसे चोट लगी हो, उसका एहसास हमेशा प्रकाशमय शरीर में रहता ही है। उदाहरण

के लिए जैसे किसी बच्चे के पेट में हमेशा दर्द रहता हो, और वो दर्द काफी सालों तक रहे, या फिर यूँ कहें कि वो हमेशा उस दर्द के बारे में कोसता रहे, कुढ़ता रहे, तो वो सारी विचार तरंगें आभा के अंदर बढ़ती रहती हैं और वो तरंगें जब आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरे शरीर में प्रवेश करेगी तो वो तरंगें उस एहसास को लेकर चली जाएंगी, इसलिए अगर आपको किसी अंग में तकलीफ है तो आपका ये अभी का नहीं है, पिछले जन्म का है, जो आप आभा के अंदर लेकर आए हैं, और ये आने वाले समय में, कुछ दिनों में बच्चे के अंदर उभरना शुरू होता है। इसलिए

हम चाहे कितना भी इलाज करा लें, वो ठीक नहीं होगा जब तक प्रकाशमय शरीर में ये वाले विचार हैं। इसलिए जब हम इन विचारों को हटा देंगे तो हमारा उस अंग से संबंधित दर्द हमेशा के लिए चला जाएगा। लेकिन इसकी एक विधि है, वो उसी अनुसार करने से होता है। अगले अंक में हम इसके बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।
- क्रमशः



सुभाष नगर-उत्तराखण्ड। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए हरिद्वार से आये स्वामी श्री शिव रघुवंश पुरी जी, विधानसभा अध्यक्ष प्रेम चन्द अग्रवाल, विधायक चन्दन राम दास, विधायक पूरण सिंह फल्याण, बहन हेमा पुरोहित, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. प्रेमलता तथा अन्य गणमान्य लोग।



दिल्ली-दिलशाद गार्डन। विश्व पर्यावरण दिवस पर कार्यक्रम के दौरान पौधारोपण करते हुए नवनिर्वाचित काउंसलर, म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के बी.एस. पनवर, ब्र.कु. बहनें तथा भाई।



हाथरस-उ.प्र.। 'पत्रकारिता सम्मेलन' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डॉ. एम.पी. सिंह, ए.एस.पी. डॉ. अरविंद कुमार, पी.टी.आई. संवाददाता डॉ. गुरुदत्त भारती, जिला सूचनाधिकारी यतीश चन्द्र गुप्ता, ब्र.कु. कैप्टन अहसान सिंह तथा ब्र.कु. शान्ता।



टोंक-राज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति' कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. कृष्णा बहन, नगर परिषद की सभापति लक्ष्मी जैन, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ओ.पी. जागिड़, भाजपा प्रवक्ता ओमप्रकाश गुप्ता तथा अन्य।



जयपुर-वापूनगर। योग दिवस के अवसर पर उत्तर-पश्चिम रेलवे जयपुर में सभी को राजयोग के द्वारा तन व मन को स्वस्थ रखने की विधि बताने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. पदमा।



हज़ारीबाग-झारखण्ड। कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण में पदाधिकारियों को 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' का कोर्स कराने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. हर्षा तथा ब्र.कु. तृप्ति।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहली-22-2017

1	2			3	4	5	6	7
8		9		10				
					11			
12	13		14					15
						16	17	
18		19					20	
21					22	23		
				24				
25	26		27					
28				29			30	

बनें विजेता : पहली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेजें ताकि हमें पहली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

- बड़ा, रोग भले ही...था परंतु मातेश्वरी पड़े (4)
- जी का आत्म नियंत्रण उससे कहीं अधिक (4)
- वेमिसाल था (4)
- समय, काल, पहर (2)
- संगमयुग में शिव बाबा द्वारा ज्ञान वकी शिक्षा मिलती है (4)
- जगदम्बा सरस्वती को.... भी कहते हैं (4)
- संगमयुगी आध्यात्मिक ज्ञान ही.... ज्ञान है (4)
- समय,चक्र (2)
-से मम्मा का जीवन जन सामान्य से उच्च था (4-4)
- एक मीठा लम्बोतर कंद जो सब्जी में काम आता है (3)
- कोई ऐसा कर्म न हो जो बाद में.... करना
- भक्त, पुजारी से पूजा कराने वाला व्यक्ति (4)
- पराजित, गले की माला (2)
- अब तुम्हें माया के सामने करनी है (4)
- गम्भीरता और का बैलेंस हो (5)
- मम्मा अपनी उच्च धारणा के कारण.... नाम से प्रसिद्ध हुई (2-2)
- छुट्टी, विश्राम दिवस (4)
- सौ, सैकड़ा (2)
- सुलझाना, भूमि जोतने का यन्त्र (2)
- एक छोटा वाद्ययन्त्र, संकेत सूचक आवाज़ (2)

बायें से दायें

- बुद्धि, आत्मा के निर्णय शक्ति को.... कहते हैं (3)
- थोड़ा, कम, तनिक (2)
- खुशियों से भरा जीवन, हर पल में.... है (3)
- कला का प्रदर्शन करने वाला, विशेष गुणी व्यक्ति (4)
- विशेष योगी, मम्मा ही मातेश्वरी और.... हैं (4)
- नियंत्रण, ज्ञान मार्ग में मन-बुद्धि पर... लगाना ज़रूरी है (3)
- जब कोई परमयोगी अपने देह का....करता है तो वातावरण में गहन शांति के प्रकम्पन महसूस होते हैं (4)
- सारी दुनिया एक डूबता....है उसे पार लगाना है (3)
- सहजता, एक दिव्य गुण (4)
- धान की....वर्षा ऋतु में पैदा होती है (3)
- शांति, मानव.... चैन से रहना चाहता है (3)
- नदियों, पहाड़ों, सागर का तट-वर्ती भाग (4)
- अवधपति, अवध के राजा (4)
- सौ वर्ष पूर्ण, सौ साल की अवधि (3)
- ब्र.कु. हरिशंकर यादव, वाराणसी